देवी श्रीशारिका अष्टोत्तरशत नामावली

रचयिता

प्रो० मखनलाल कुकिलू

परामर्श

प्रो० नीलकण्ठ गुरुटू

ईश्वर आश्रम ट्रस्ट

गुप्तगंगा, निशात, श्रीनगर, कश्मीर



परिचय

ब्रह्मवादिनी देवी शारिका जी की नामावली के प्रकाशन के लिए चिरकाल से भक्तों का आग्रह था। आशा है कि इसके मनन से वे अवश्य ही साधना मार्ग पर अग्रसर होंगे।

देवी श्रीशारिका
अष्टोत्तरशत नामावली

रचयिता

प्रो० मखनलाल कुकिलू

परामर्श

प्रो० नीलकण्ठ गुरुटू

प्रकाशक

ईश्वर आश्रम ट्रस्ट

गुप्तगंगा, निशात, श्रीनगर, कश्मीर

मूल्य : रु. ३०.०

श्रीशारिकास्तुतिः

ृष्टविग्रहागतं मरीचिचक्रविस्तरम्।
ग्रहैककारणं नमाम्यहं गुरुक्रमम्।।
अमृतेश्वरभैरवं स्वच्छन्दनाथं
ाव ठनाथं ऋषि दुर्वाससम्।
ानस ुत्रं त्र्यम्बकनाथं
कनाथं श्री थम्।।
ुत्रीं अर्धत्र्यम्बकाख्यां
त्र्यम्बकादित्यम् संगमादित्यं।।
ित्यमरुणादित्यम्
उ नन्द सोमानन्दं उत्पलदेवं
ार्यवरं श्रीशम्भुनाथम्।
लक्ष्मणगुप्तमभिनवगुप्तं
क्षेमराजं योगराजं च।।
ब्रह्म मनकाकं शैवाचार्यं रामं
शिष्यं श्रीमहताबकाकम्।।
गुरुसन्तति रूपे अवतारितं
शिवशम्भुं ईश्वरस्वरूपं च।।
भैर रुद्रं शिव ं आलयं करुणालयम्।

नमामि भगवत् पादं शंकरं लोकशंकरम्।।
शंकरं शंकराचार्यं महान्तमभिनवगुप्तम्।
शैव शंकर अवतारितं ईश्वरस्वरूपं पुनः पुनः
नमामि—३।।
परभैरवलीनां तच्छिष्यां श्री शारिकादेवीं च सदा
नमामि।
शारिकां सुभगाकारां शांतां सर्वजनप्रियां।
नैष्ठिकां स्वगुरोः हृत्स्थां सन्ततं तां स्मराम्यहम्।।
श्रीमत्यै ब्रह्मवादिन्यै देहवत्यै गिरे पुनः।
दयाद्र शारिका देव्यै कृत्या वाचा हृदानमः।।
ॐ परभैरव लीनीभूता
आत्मशक्तिः श्रीशारिकादेवी।
ॐ परभैरवलीन्यै पराशक्त्यै
श्री शारिका देव्यै नमोनमः।।

हे हरे-हे हरे-हे हरे-हे हरे।
शारिके-शारिके-शारिके नमोऽस्तुते।।
शारिके-शारिके-शारिके नमोऽस्तुते।।
शारिके-शारिके-शारिके नमोऽस्तुते।।
त्वमेवहि महाराज्ञी शारिके-शारिके।

शारिके-शारिके-शारिके नमोऽस्तुते॥
त्वमेवहि महालक्ष्मी शारिके शारिके।
शारिके-शारिके-शारिके नमोऽस्तुते॥
त्वमेवहि ज्वालामुखी शारिके शारिके।
शारिके-शारिके-शारिके नमोऽस्तुते॥
त्वमेवहि शिवादेवी शारिके शारिके।
शारिके-शारिके-शारिके नमोऽस्तुते॥
त्वमेवहि सरस्वती शारिके शारिके।
शारिके-शारिके-शारिके नमोऽस्तुते॥
त्वमेवहि महादेवी शारिके शारिके।
शारिके-शारिके-शारिके नमोऽस्तुते॥
त्वमेवहि त्रिपुरसुन्दरी शारिके शारिके।
शारिके-शारिके-शारिके नमोऽस्तुते॥
हे स्वयं पार्वती शारिके शारिके।
शारिके-शारिके-शारिके नमोऽस्तुते॥
अग्रतः पृष्ठतः उत्तरतः दक्षिणतः।
शारिके-शारिके-शारिके नमोऽस्तुते॥
ईश्वर स्वरूपस्य सर्वस्वशारिके।
शारिके-शारिके-शारिके नमोऽस्तुते॥

देवी श्रीशारिका

अष्टोत्तरशत नामावली

ध्यानम्

श्री शारिके! शरण्ये! त्वं मयि दासे दयां कुरु।
तृष्णादुःखौघसन्तापं पापं शापं विनाशय॥

✧ ✧ ✧

जगत् कर्त्र्यै जगत् भर्त्र्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ १॥
ईश्वराश्रमसाम्राज्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ २॥
राधिकागर्भ जातायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ३॥
सोपोरी जयलालस्य।
आत्मजायै नमो नमः॥ ४॥
आबाल ब्रह्मचारिण्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ५॥

शारदादेशवासिन्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ६॥
वासगार्गिगोत्रवत्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ७॥
मार्गशुक्ले द्वितीयस्यां।
जातायै ते नमो नमः॥ ८॥
गुरोः लक्ष्मणदेवस्य।
शिष्यायै ते नमो नमः॥ ९॥
गुरोः सर्वस्वभूतायै।
शारिकायै नमो नमः॥ १०॥
श्वेताम्बरपटायै श्री।
शारिकायै नमो नमः॥ ११॥
सच्चिदानन्दरूपायै।
शारिकायै नमो नमः॥ १२॥
अचिन्त्यशक्तिरूपायै।
शारिकायै नमो नमः॥ १३॥
सर्वैषणाविहीनायै।
शारिकायै नमो नमः॥ १४॥
आधिव्याधिहरायै श्री।
शारिकायै नमो नमः॥ १५॥

प्रपन्नार्ति विदारिण्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ १६॥
उदारख्यातिवाहिन्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ १७॥
सर्वाभीष्टफलदात्र्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ १८॥
सदा भक्त विनोदिन्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ १९॥
सत्यतत्त्वावबोधिन्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ २०॥
द्राक् जनस्याघमर्षिण्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ २१॥
प्रसन्नानन शान्तायै।
शारिकायै नमो नमः॥ २२॥
सदा स्वाह्लादलीनायै।
शारिकायै नमो नमः॥ २३॥
तपस्ये मुक्तिलब्धायै।
शारिकायै नमो नमः॥ २४॥
नित्यं श्रोत्रियपूज्यायै।
शारिकायै नमो नमः॥ २५॥

पुरन्ध्रीगण मुख्यायै।
शारिकायै नमो नमः॥ २६॥
लक्ष्मणस्य गुरोः स्वात्म-
भूतायै ते नमो नमः॥ २७॥
संख्यावद्भिरादृतायै।
शारिकायै नमो नमः॥ २८॥
कार्यकारण रूपायै।
शारिकायै नमो नमः॥ २९॥
कलिकल्मषनाशिन्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ३०॥
शैशवात् ज्ञाततत्त्वायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ३१॥
मार्तण्डवत्प्रचण्डायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ३२॥
दुर्ग्रहरिपु काष्ठायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ३३॥
निगूढत्वेऽप्यगूढायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ३४॥
आवासस्था वनस्थायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ३५॥

लक्ष्म्यै ईकाररूपायै।
शारिकायै नमो नमः।। ३६।।
अम्बायै सत्यभामायै।
शारिकायै नमो नमः।। ३७।।
दान्तायै धर्मरूपिण्यै।
शारिकायै नमो नमः।। ३८।।
शुभ्रायै साधुश्रेष्ठायै
शारिकायै नमो नमः।। ३९।।
लल्लादेवीत्यभिख्यायै।
शारिकायै नमो नमः।। ४०।।
शुद्धस्फटिक रूपायै।
शारिकायै नमो नमः।। ४१।।
शान्तायै ऋजुरूपायै।
शारिकायै नमो नमः।। ४२।।
अन्नमाङ्गल्य दायिन्यै।
शारिकायै नमो नमः।। ४३।।
वृत्ति संस्कार निर्मात्र्यै।
शारिकायै नमो नमः।। ४४।।
हंसायै हंसगामिन्यै।
शारिकायै नमो नमः।। ४५।।

प्रपन्नभक्त लोलायै।
शारिकायै नमो नमः।। ४६।।
ज्ञानमार्ग प्रदर्शिन्यै।
शारिकायै नमो नमः।। ४७।।
करुणारस प्लुतायै।
शारिकायै नमो नमः।। ४८।।
सुभगायै समर्थायै।
शारिकायै नमो नमः।। ४९।।
ज्ञानमूर्त्यै सिद्धिदायै।
शारिकायै नमो नमः।। ५०।।
भक्तहृन्मध्यवासिन्यै।
शारिकायै नमो नमः।। ५१।।
दीन सन्तापनाशिन्यै।
शारिकायै नमो नमः।। ५२।।
दुःखदौर्भाग्य दाहिन्यै।
शारिकायै नमो नमः।। ५३।।
ज्ञानविज्ञान गम्यायै।
शारिकायै नमो नमः।। ५४।।
स्वस्थायै च सुशीलायै।
शारिकायै नमो नमः।। ५५।।

सर्वदा सत्स्वरूपायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ५६॥
प्रभयानित्यवन्ध्यायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ५७॥
राकेन्दु सौम्यवर्णायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ५८॥
आनन्द भरितायै श्री।
शारिकायै नमो नमः॥ ५९॥
आशापाश विद्राविन्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ६०॥
ईति भीति हरायै श्री।
शारिकायै नमो नमः॥ ६१॥
अगण्यगुणवाहिन्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ६२॥
अकल्मष स्वरूपायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ६३॥
परमार्ग प्रदायिन्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ६४॥
अकोपनाशीलवत्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ६५॥

गुरवेऽर्पित सत्त्वायै।
शारिकायै नमो नमः।। ६६।।
क्षमायै क्षान्ति शीलायै।
शारिकायै नमो नमः।। ६७।।
भूतेषु चित्तिरूपायै।
शारिकायै नमो नमः।। ६८।।
ह्रियः साकाररूपायै।
शारिकायै नमो नमः।। ६९।।
प्रभयाप्यगम्यायै।
शारिकायै नमो नमः।। ७०।।
आगमज्ञात सारायै।
शारिकायै नमो नमः।। ७१।।
दययाकृष्ट चित्तायै।
शारिकायै नमो नमः।। ७२।।
माहेश्वर्यै महादेव्यै।
शारिकायै नमो नमः।। ७३।।
तुर्यायै ब्रह्मरूपायै।
शारिकायै नमो नमः।। ७४।।
स्मृता द्वैतविनाशिन्यै।
शारिकायै नमो नमः।। ७५।।

श्रद्धायै दानवीरायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ७६॥
सर्वसंशयहारिण्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ७७॥
रहः-वास विनोदिन्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ७८॥
रुद्रायै कोमलाकृत्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ७९॥
नन्दिन्यै विघ्ननाशिन्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ८०॥
स्थूलायै सूक्ष्मरूपिण्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ८१॥
ईश्वराश्रममुख्यायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ८२॥
वयोवस्थाविहीनायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ८३॥
ब्रह्मात्मैक्य स्वरूपिण्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ८४॥
सर्वगायै स्वतन्त्रायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ८५॥

जन्ममृत्युविमुक्तायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ८६॥
मुग्धायै मृदुभाषिण्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ८७॥
गुरुसेवाव्रतस्थायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ८८॥
तन्त्र सत्तत्त्वविज्ञायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ८९॥
प्रद्युम्नपर्वतस्थायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ९०॥
सद्यः सर्वस्वदायिन्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ९१॥
त्रिकशास्त्रविदग्धायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ९२॥
गुरुणार्पित तत्त्वायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ९३॥
दयादाक्षिण्यरूपायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ९४॥
अन्तेवासिगणाग्रायै।
शारिकायै नमो नमः॥ ९५॥

ऋतम्भरास्वरूपिण्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ९६॥
दौर्मनस्य विदाहिन्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ९७॥
विविधामय संहन्त्र्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ९८॥
प्रज्वलत्वर्ष्मधारिण्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ ९९॥
पद्मकिञ्जल्कवर्णायै।
शारिकायै नमो नमः॥ १००॥
कीनाशभय हारिण्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ १०१॥
रम्भावत् रम्यरूपायै।
शारिकायै नमो नमः॥ १०२॥
रम्यायै भुवनेश्वर्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ १०३॥
वात्सल्य परिपूर्णायै।
शारिकायै नमो नमः॥ १०४॥
व्यक्ताव्यक्त स्वरूपिण्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ १०५॥

शाङ्कर्यै श्रीकर्यै साध्व्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ १०६॥
परपीडापहारिण्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ १०७॥
षडध्वातीत रूपिण्यै।
शारिकायै नमो नमः॥ १०८॥

भक्तिबृंहित भावेन पिकेनानन्यचेतसा।
माला श्रीशारिकादेव्या माहात्म्यस्य कृतामया॥
यः पठेत् प्रातरुत्थाय सौभाग्यसुखकांक्षया।
निर्विकारस्तु स साधु दिवौकसैर्महीयते॥

✧ ✧ ✧

आरती

व्याप्त चराचरभाव विशेषं, चिन्मयमेकमनन्तमनादिम्।
भैरवनाथमनाथशरण्यं तन्मयचित्ततया हृदि वन्दे॥
त्वन्मयमेतदशेषमिदानीं भाति ममत्वदनुग्रहशक्त्या।
त्वं च महेश सदैव ममात्मा स्वात्ममयं मम तेन समस्तम्॥
स्वात्मनि विश्वगते त्वयि नाथे तेन न संसृतिभीतेः कथास्ति।
सत्स्वपि दुर्धर दुःख विमोह त्रास विधायिषु कर्मगणेषु॥
अन्तक मां प्रति मा दृशमेनां क्रोधकरालतमां विदधीहि।
शंकर सेवन चिन्तन धीरो भीषण भैरव शक्तिमयोऽस्मि॥
इत्थमुपोढभवन्मय संवित् दीधिति दारित भूरि तमिस्रः।
मृत्युर्यमान्तक कर्म पिशाचैर्नाथ नमोस्तु न जातु बिभेमि॥
प्रोदित सत्य विबोध मरीचि प्रोक्षित विश्व पदार्थ सतत्वः।
भाव परामृत निर्भर पूर्णे त्वय्यहमात्मनि निर्वृत्तिमेमि॥
मानसगोचरमेति यदैव क्लेशदशातनुताप विधात्री।
नाथ! तदैव मम त्वदभेद स्तोत्र परामृत वृष्टिरुदेति॥
शंकर सत्यमिदं व्रतदानस्नान तपो भवताप विनाशि।
तावक शास्त्र परामृत चिन्ता सिन्ध्यति चेतसि निर्वृत्तिधारा॥
नृत्यति गायति हृष्यति गाढं संविदियं मम भैरवनाथ।
त्वां प्रियमाप्य सुदर्शनमेकं दुर्लभमन्य जनैः समयज्ञम्॥
वसुरसपौषे कृष्ण दशम्यामभिनवगुप्तः स्तवमिममकरोत्।
येनविभुर्भवमरुसन्तापं शमयति झटिति जनस्य दयालुः॥

आरती गुरुदेव की

जय गुरुदेव हरे जय जय गुरुदेव हरे,
मम सद्गुरु श्रीलक्ष्मण क्षण में कष्ट हरे॥१॥
सबलक्षण सुन्दर तू सर्वसंकट हारी।
अन्तस्तमहर्ता तू भव अर्णव तारी॥जय०॥२॥
सौम्यमूर्ति तू साजे अवहितजन ध्यावे।
भुक्ति-मुक्ति के दाता मांगत कर जोरे॥जय०॥३॥
जिस दिन तुझको पाया निखर उठी काया।
भव-बन्धन सब बिखरे हरली मम माया॥जय०॥४॥
हे मम सद्गुरु! हर लो दुष्कृत जन्मों के।
मेरे पालनकर्ता द्वार पड़ा तेरे॥जय०॥५॥
मल मेरे सब काटो हृदयकमल विकसे।
अन्तस्त्रय मेरा नित तुझ में लीन रहे॥जय०॥६॥
श्रीगुरुपद से जन्मे धूल से भाल सजे।
विधि के कलुषित अक्षर विनशे हिम जैसे॥जय०॥७॥
तनमन सौंपूं तुझको हे सद्गुरु प्यारे।
नाम स्मरण जप में नित, रहूं मगन तेरे॥जय०॥८॥
मैं बुद्धिहीन हूं चंचल तन मेरा निर्बल।
एकबार अपनाओ जन्म सफल होवे॥जय०॥९॥
श्रीलक्ष्मण गुरुदेव की आरती जो गावे।
वह शिवभक्त निःसंशय शिवसम हो जावे॥जय०॥१०॥
जय गुरुदेव हरे जय जय गुरुदेव हरे।
मम सद्गुरु श्रीलक्ष्मण क्षण में कष्ट हरे॥